

विरासत को आगे बढ़ाने की प्रक्रिया शुरू

विश्व धरोहर सूची तक सारनाथ का गौरवपूर्ण सफर

26 अगस्त, 2026

दक्षिण कोरिया के बुसान में विश्व धरोहर समिति के 48वें सत्र में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में सारनाथ के प्राचीन बौद्ध स्थल को शामिल किया गया है। इसके साथ भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को एक और वैश्विक मान्यता मिली है। सारनाथ में भगवान बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था और ये उनके जीवन से जुड़े चार प्रमुख बौद्ध तीर्थ स्थलों में से एक है। इस उपलब्धि के साथ भारत में यूनेस्को विश्व धरोहर संपत्तियों में संख्या 45 हो गई है। अब हमारा देश विश्व स्तर पर छठे और एशिया प्रशांत क्षेत्र में दूसरे स्थान पर है। यह बौद्ध धर्म के जन्मस्थान के रूप में भारत की पहचान और उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य की विरासत को संरक्षित करने की प्रतिबद्धता को भी मजबूत करता है।

भारत की विरासत के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि



विरासत अतीत की याद दिलाने से कहीं अधिक है। यह वर्तमान को आकार देती है और भविष्य का मार्गदर्शन करती है। यह उन कहानियों, परंपराओं और मूल्यों को दर्शाती है जिन्हें समुदाय संरक्षित करते हैं और पीढ़ियों तक पहुंचाते हैं। सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत पहचान, ज्ञान और प्रेरणा के अपूरणीय स्रोत हैं।

25 जुलाई 2026 की शाम, दक्षिण कोरिया के बुसान में विश्व धरोहर समिति के 48वें सत्र में, सारनाथ के प्राचीन बौद्ध स्थल को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया। इस उपलब्धि के साथ, भारत में अब यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त 45 विश्व धरोहर संपत्तियां हो गई हैं।

यह मान्यता विश्व धरोहर सूची में एक नई प्रविष्टि से कहीं अधिक है। यह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का जश्न है, जो विविध परंपराओं, उल्लेखनीय वास्तुकला और एक लंबे इतिहास को संजोए हुए है। यह विश्व विरासत सम्मेलन की भावना को भी

पुष्ट करती है, जो 196 देशों के दलों में वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लाभ के लिए उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य के स्थानों की रक्षा करना चाहती है।

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन को यूनेस्को के नाम से जाना जाता है। ये मानवता के लिए असाधारण मूल्यों सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत की पहचान, संरक्षण और संरक्षण को बढ़ावा देता है। यह प्रतिबद्धता विश्व *सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के संरक्षण से संबंधित समझौते में निहित है*, जो 1972 में यूनेस्को द्वारा अपनाया गया था।

जुलाई 2026 तक, यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में 173 देशों की 1,273 संपत्तियां शामिल थीं, इनमें 991 सांस्कृतिक, 240 प्राकृतिक और 42 मिश्रित स्थल शामिल हैं। अक्टूबर 2024 तक, 196 सदस्य देशों ने विश्व धरोहर समझौते को मंजूरी दी है, इससे यह संयुक्त राष्ट्र की किसी भी एजेंसी द्वारा सबसे ज्यादा सराहे और माने जाने वाले समझौतों में से एक बन गया है।

राष्ट्रीय सीमाओं से परे तक फैला हुआ विश्व विरासत का विचार अद्वितीय है। ये स्थल अलग-अलग देशों के क्षेत्रों के अंतर्गत आते हैं फिर भी इनका महत्व पूरी मानवता का है। इन्हें एक साझा विरासत के रूप में पहचाना जाता है और इन्हें आने वाली पीढ़ियों के लिए बनाए रखने के लिए सामूहिक देखभाल और सुरक्षा मिलनी चाहिए।

सारनाथ की कहानी

सारनाथ बौद्ध परंपरा में विशेष स्थान रखता है। उत्तर प्रदेश के वाराणसी में स्थित, यह बौद्ध तीर्थयात्रा के चार प्रमुख स्थलों में से एक है। यूनेस्को की विश्व धरोहर शिलालेख में दो जुड़े हुए घटक शामिल हैं: चौखंडी स्तूप और सारनाथ के पुरातात्विक अवशेष। पुरातात्विक परिसर में धमेक स्तूप, धर्मराजिका स्तूप, मूलगंधकुटी विहार, अशोक स्तंभ और कई अन्य प्राचीन अवशेष शामिल हैं। साथ में, वे इस प्राचीन स्थल के ऐतिहासिक परिदृश्य को संरक्षित करते हैं।

बौद्ध परंपरा में ऋषिपतन, इशिपतन और मृगदेव के रूप में जाना जाता है, सारनाथ वह स्थान है जहां गौतम बुद्ध ने 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व में अपना पहला उपदेश दिया था। धर्मचक्र **प्रवर्तन** या "प्रगति के पथ पर नया मोड़" के रूप में जाना जाने वाला यह उपदेश बौद्ध संघ की शुरुआत और आर्य अष्टांगिक मार्ग के सिद्धांतों की स्थापना की पहचान करता है।

सदियों से, सारनाथ का विकास शाही, मठवासी और सामान्य संरक्षण के माध्यम से हुआ। बुद्ध के पहले उपदेश और उनके पहले पांच शिष्यों के साथ उनकी मुलाकात से जुड़े स्थान के चारों ओर कई स्तूपों, मंदिरों और विहारों का निर्माण किया गया था। यह

स्थल लगभग सोलह शताब्दियों के निरंतर विकास को दर्शाता है। इसके स्मारक चौथी-तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के मौर्य काल से लेकर 12वीं शताब्दी ईस्वी तक के हैं, जब सारनाथ का पतन हो गया और नष्ट हो गया। 18 वीं शताब्दी में इसकी पुनर्खोज तक यह जगह अनदेखी रही।

Why UNESCO Recognised Sarnath

Sarnath preserves one of the world's most influential spiritual landscapes

It includes

- Dhamek Stupa
- Dharmarajika Stupa
- Ashokan Pillar
- Mulagandhakuti Vihara
- Chaukhandi Stupa

Source: Ministry of Culture



मान्यता का मार्ग

सारनाथ की विश्व धरोहर मान्यता की यात्रा एक लंबी और सावधानीपूर्वक प्रक्रिया रही है। इस प्राचीन स्थल को 1998 में भारत की विश्व धरोहर की अस्थायी सूची में शामिल किया गया था।



इसके शिलालेख का प्रस्ताव जनवरी 2025 में विश्व धरोहर समिति द्वारा विचार के लिए प्रस्तुत किया गया था। इसके बाद अठारह महीने की लंबी प्रक्रिया शुरू हुई। इसमें यूनेस्को के सलाहकार निकायों के साथ तकनीकी बैठकें और प्रस्तावित संपत्ति की योग्यता की समीक्षा करने के लिए आईसीओएमओएस द्वारा एक मूल्यांकन मिशन शामिल था।

आईसीओएमओएस, यूनेस्को के सलाहकार निकायों में से एक के रूप

में कार्य करते हुए, शिलालेख के लिए प्रस्तावित सांस्कृतिक और मिश्रित संपत्तियों का मूल्यांकन प्रदान करता है। इस प्रक्रिया का समापन दक्षिण कोरिया के बुसान में विश्व धरोहर समिति के 48वें सत्र में लिए गए ऐतिहासिक निर्णय के साथ हुआ।

सारनाथ के प्राचीन बौद्ध स्थल को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची (विश्व धरोहर सम्मेलन के ढांचे के तहत) के मानदंड (iii) और (vi) के तहत नामित किया गया था।

मानदंड (iii) बौद्ध तीर्थयात्रा के चार प्रमुख स्थलों में से एक के रूप में सारनाथ के स्थायी आध्यात्मिक महत्व को मान्यता देता है। यह सदियों से साइट पर निर्मित और पुनर्निर्माण की गई कई धार्मिक इमारतों और स्मारकों में परिलक्षित होता है।

मानदंड (vi) बुद्ध के जीवन में होने वाली घटनाओं के साथ सारनाथ के प्रत्यक्ष और मूर्त जुड़ाव को पहचानता है जो बौद्ध समुदाय के लिए उत्कृष्ट महत्व रखते हैं। इनमें उनका पहला उपदेश और बोधगया में बोधि (ज्ञान) प्राप्त करने के बाद उनके पहले शिष्यों के साथ उनकी भेंट शामिल है। सदियों से सारनाथ में निर्मित कई संरचनाएं इन घटनाओं के निरंतर महत्व, बुद्ध की शिक्षाओं और त्रिरत्न की अवधारणा को दर्शाती हैं।

शिलालेख विश्व धरोहर सम्मेलन के व्यापक उद्देश्य को भी दर्शाता है। यूनेस्को वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य की विरासत को संरक्षित और बढ़ावा देना चाहता है।

सारनाथ: शांति की वैश्विक विरासत

सारनाथ का एक पुरातात्विक स्थल से कहीं अधिक महत्व है। यह जापान, थाईलैंड, श्रीलंका, म्यांमार, वियतनाम, दक्षिण कोरिया, कंबोडिया, मंगोलिया और कई अन्य देशों के बौद्धों के लिए एक वैश्विक तीर्थ स्थल बना हुआ है। दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित बौद्ध तीर्थस्थलों में से एक के रूप में, यह बौद्ध धर्म के जन्मस्थान के रूप में भारत की पहचान को मजबूत करता है और बौद्ध देशों के साथ सांस्कृतिक सम्बंधों और अंतर्राष्ट्रीय जुड़ाव के लिए एक सेतु के रूप में कार्य करता है।

सारनाथ के शिलालेख के साथ, बुद्ध के जीवन से जुड़े चार प्रमुख बौद्ध तीर्थ स्थलों में से तीन अब यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल हैं। इनमें नेपाल में लुंबिनी, बिहार में बोधगया में महाबोधि मंदिर और उत्तर प्रदेश में सारनाथ शामिल हैं। वे भारत में सांची, नालंदा और अजंता, श्रीलंका में अनुराधापुरा, बांग्लादेश में पहाड़पुर और वर्तमान पाकिस्तान में तक्षशिला और तख्त-ए-बाही सहित अन्य महत्वपूर्ण बौद्ध विश्व धरोहर स्थलों में शामिल हो गए हैं।

यह मान्यता सारनाथ के उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य की रक्षा के लिए भारत की प्रतिबद्धता की भी पुष्टि करती है। सरकार पर्यटन का स्थायी प्रबंधन करेगी और भविष्य की पीढ़ियों के लिए साइट की प्रामाणिकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए बफर जोन के भीतर अनियोजित विकास को रोकेगी।

भारत की विरासत की सफलता को सक्षम करना

प्रत्येक सफल नामांकन के पीछे वर्षों का संस्थागत आधार होता है। विश्व धरोहर संपत्तियों के प्रति भारत का दृष्टिकोण केंद्रीय एजेंसियों, राज्य सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय निकायों के बीच घनिष्ठ समन्वय पर निर्भर करता है।

संस्कृति मंत्रालय

संस्कृति मंत्रालय सांस्कृतिक मामलों पर यूनेस्को के साथ भारत के सम्बंध का नेतृत्व करता है। यह यूनेस्को के सांस्कृतिक सम्मेलनों के तहत भारत की प्रतिबद्धताओं को लागू करता है और विश्व धरोहर स्थलों और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्वों के लिए नामांकन का समन्वय करता है। मंत्रालय अंतर्राष्ट्रीय विरासत संरक्षण मानकों को भी बढ़ावा देता है और यूनेस्को और अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक सहयोग के माध्यम से सांस्कृतिक कूटनीति को मजबूत करता है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) भारत सरकार की ओर से विश्व विरासत से सम्बंधित मामलों के लिए नोडल एजेंसी है। यह 28 विश्व धरोहर संपत्तियों सहित 3688 केंद्रीय संरक्षित स्मारकों का संरक्षण और रखरखाव करता है। इसके कार्य में पेयजल, शौचालय, रास्ते और भूनिर्माण जैसी आगंतुक सुविधाएं प्रदान करने के अलावा प्राचीन संस्मारक और पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958 और पुरावशेष और कला निधि अधिनियम, 1972 नामक दो कानूनों को लागू करना भी शामिल है। प्रत्येक स्मारक की आवश्यकताओं और संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर नियमित रूप से संरक्षण और रखरखाव किया जाता है।

भारत की विश्व धरोहर सूची में विस्तार

हमारी विरासत सिर्फ पत्थरों, लिपियों या खंडहरों तक सीमित नहीं है। यह मंदिर की दीवार की प्रत्येक फुसफुसाहट में है, प्राचीन किलों कि नक्काशियों और पीढ़ियों से चले आ रहे हर लोक गीत में यह झलकती है। यह भारत की सभ्यता की कहानी बताती है और देश की समृद्ध सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत को दर्शाती है।



देश	विश्व धरोहर स्थल (जुलाई 2026 तक)
इटली	62
चीन	61
फ्रांस	56
जर्मनी	55
स्पेन	50
भारत	45
मेक्सिको	36
यूनाइटेड किंगडम	35
रूस	33

आज, भारत 45 यूनेस्को विश्व धरोहर संपत्तियों का घर है, इसमें 37 सांस्कृतिक, 7 प्राकृतिक और 1 मिश्रित स्थल शामिल हैं। यह देश को विश्व स्तर पर छठे और एशिया प्रशांत क्षेत्र में दूसरे स्थान पर रखता है।

भारत की पहली प्रविष्टियां एक ही वर्ष में आईं। ताजमहल, एलोरा गुफाओं और अजंता गुफाओं के साथ आगरा का

किला 1983 में शामिल किया गया था, इससे एक सूची खुल गई थी जो तब से किलों, मंदिरों, गुफाओं, रेलवे, बावड़ियों, नियोजित शहरों और राष्ट्रीय उद्यानों को कवर करने के लिए विकसित हुई है।

पिछले साल, पेरिस में यूनेस्को मुख्यालय में आयोजित विश्व धरोहर समिति के 47 वें सत्र में भारत के मराठा सैन्य परिदृश्य को शामिल किया गया था। बुसान में 48वें सत्र में इस वर्ष सारनाथ के शामिल होने के साथ, भारत की संख्या अब 45 संपत्तियों तक पहुंच गई है, इससे देश विश्व स्तर पर छठे स्थान पर और एशिया प्रशांत क्षेत्र में दूसरे स्थान पर है। भारत की अस्थायी सूची भी बढ़ कर अब 69 संपत्तियों तक पहुंच गई है। यह भविष्य में किसी भी विश्व धरोहर नामांकन के लिए अनिवार्य पहला कदम है।

भारत में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की सूची:

वर्ष	स्थल	राज्य / केन्द्र शासित प्रदेश	श्रेणी
1983	आगरा का किला	उत्तर प्रदेश	सांस्कृतिक
1983	अजंता की गुफाएं	महाराष्ट्र	सांस्कृतिक
1983	एलोरा की गुफाएं	महाराष्ट्र	सांस्कृतिक
1983	ताजमहल	उत्तर प्रदेश	सांस्कृतिक

वर्ष	स्थल	राज्य / केन्द्र शासित प्रदेश	श्रेणी
1984	कोणार्क का सूर्य मंदिर	ओडिशा	सांस्कृतिक
1984	महाबलीपुरम के स्मारक समूह	तमिलनाडु	सांस्कृतिक
1985	काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान	असम	प्राकृतिक
1985	केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान	राजस्थान	प्राकृतिक
1985	मानस वन्यजीव अभयारण्य	असम	प्राकृतिक
1986	खजुराहो स्मारक समूह	मध्य प्रदेश	सांस्कृतिक
1986	फतेहपुर सीकरी	उत्तर प्रदेश	सांस्कृतिक
1986	गोवा के चर्च और कॉन्वेंट	गोवा	सांस्कृतिक
1986	हम्पी के स्मारक समूह	कर्नाटक	सांस्कृतिक
1987	सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान	पश्चिम बंगाल	प्राकृतिक
1987	एलिफेंटा की गुफाएं	महाराष्ट्र	सांस्कृतिक
1987	पट्टदकल के स्मारक समूह	कर्नाटक	सांस्कृतिक
1987, 2004	महान जीवित चोल मंदिर	तमिलनाडु	सांस्कृतिक
1988, 2005	नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान	उत्तराखंड	प्राकृतिक
1989	सांची के बौद्ध स्मारक	मध्य प्रदेश	सांस्कृतिक
1993	हूमायूं का मकबरा, दिल्ली	दिल्ली	सांस्कृतिक
1993	कुतुब मीनार और उसके स्मारक, दिल्ली	दिल्ली	सांस्कृतिक
1999, 2005, 2008	भारत की पर्वतीय रेलगाड़ियां	पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश	सांस्कृतिक
2002	बोधगया में महाबोधि मंदिर परिसर	बिहार	सांस्कृतिक
2003	भीमबेटका की गुफाएं (रॉक शेल्टर)	मध्य प्रदेश	सांस्कृतिक
2004	चंपानेर-पावागढ़ पुरातत्व पार्क	गुजरात	सांस्कृतिक
2004	छत्रपति शिवाजी टर्मिनस	महाराष्ट्र	सांस्कृतिक
2007	लाल किला परिसर	दिल्ली	सांस्कृतिक
2010	जंतर-मंतर, जयपुर	राजस्थान	सांस्कृतिक
2012	पश्चिमी घाट	कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु	प्राकृतिक
2013	राजस्थान के पहाड़ी किले	राजस्थान	सांस्कृतिक

वर्ष	स्थल	राज्य / केन्द्र शासित प्रदेश	श्रेणी
2014	ग्रेट हिमालयन राष्ट्रीय उद्यान संरक्षण क्षेत्र	हिमाचल प्रदेश	प्राकृतिक
2014	पाटन में रानी-की-वाव (रानी की बावड़ी)	गुजरात	सांस्कृतिक
2016	नालंदा महाविहार का पुरातात्विक स्थल	बिहार	सांस्कृतिक
2016	कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान	सिक्किम	मिश्रित
2016	ले कोर्बुसिए का वास्तुशिल्प कार्य	चंडीगढ़	सांस्कृतिक
2017	अहमदाबाद का ऐतिहासिक शहर	गुजरात	सांस्कृतिक
2018	मुंबई के विक्टोरियन गोथिक और आर्ट डेको समूह	महाराष्ट्र	सांस्कृतिक
2019	जयपुर शहर	राजस्थान	सांस्कृतिक
2021	धोलावीरा: एक हड़प्पा शहर	गुजरात	सांस्कृतिक
2021	काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर	तेलंगाना	सांस्कृतिक
2023	होयसल के पवित्र मंदिर समूह	कर्नाटक	सांस्कृतिक
2023	शांतिनिकेतन	पश्चिम बंगाल	सांस्कृतिक
2024	मोड़दम्स - अहोम राजवंश की टीलेनुमा समाधि प्रणाली	असम	सांस्कृतिक
2025	भारत के मराठा सैन्य परिदृश्य	महाराष्ट्र, तमिलनाडु	सांस्कृतिक
2026	सारनाथ का प्राचीन बौद्ध स्थल	उत्तर प्रदेश	सांस्कृतिक

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए सरकार की पहल

भारत ने अपनी विशाल सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत की रक्षा, पुनर्स्थापना और संवर्धन के लिए कई सार्थक कदम उठाए हैं। ये पहल देश की कालातीत परंपराओं और ऐतिहासिक खजानों की सुरक्षा के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं। संरक्षण, डिजिटलीकरण, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और जनभागीदारी में केंद्रित प्रयासों के माध्यम से भारत की समृद्ध विरासत की रक्षा की जा रही है।

पुरावशेषों की पुनर्प्राप्ति

भारत में 2014 के बाद से 656 सहित कुल 669 पुरावशेष वापस लाए गए हैं। इस प्रयास में संस्कृति मंत्रालय, एएसआई, भारतीय मिशन और प्रवर्तन एजेंसियां शामिल हैं। हाल ही में, 657 भारतीय कला वस्तुओं को अमेरिकी कानून प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा भारतीय दूतावास को सौंपा गया था। प्रमुख वापसी में चोल-काल के शिव नटराज, परवाई के साथ संत सुंदरर और सोमस्कंद शामिल हैं।

विरासत अपनाएं

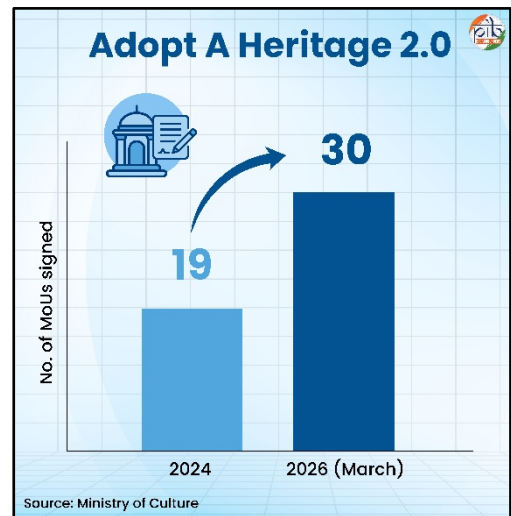
सितंबर 2017 में शुरू और सितंबर 2023 में नया रूप वाला एडॉप्ट ए हेरिटेज 2.0 कार्यक्रम निजी कंपनियों, सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों, गैर सरकारी संगठनों, ट्रस्टों और समाजों के साथ सहयोग के लिए एक रूपरेखा तैयार करता है।

यह राष्ट्रीय महत्व के संरक्षित स्मारकों में आगंतुक-अनुकूल सुविधाओं को विकसित करने और बनाए रखने पर केंद्रित है। कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) और अन्य योगदानों के माध्यम से सहायता प्रदान की जाती है। इसका उद्देश्य आगंतुक अनुभव को बेहतर बनाना है।

मार्च 2026 तक, 'अडॉप्ट अ हेरिटेज 2.0' प्रोग्राम के तहत कुल 30 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

यह कार्यक्रम पहले से ही बेहतर साइट प्रबंधन और बढ़ी हुई सार्वजनिक भागीदारी के संदर्भ में दृश्यमान परिणामों का प्रदर्शन कर रहा है। यह गोद लिए गए स्मारकों में आगंतुकों की मजबूत भागीदारी में परिलक्षित होता है, इससे सामूहिक रूप से वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान कुल 13.59 मिलियन आगंतुकों की उपस्थिति दर्ज हुई है।

ये आंकड़े आगंतुकों की मजबूत रुचि को दर्शाते हैं और सुझाव देते हैं कि कार्यक्रम के तहत बेहतर सुविधाएं, सेवाएं और ऑन-साइट सुविधा आगंतुकों के बेहतर अनुभव और गोद लिए गए विरासत स्थलों पर उच्च जुड़ाव में योगदान दे रही हैं।



ज्ञान भारतम मिशन

2025 में शुरू किया गया ज्ञान भारतम मिशन, सरकार की प्रमुख पहल है जिसका उद्देश्य भारत की विशाल पांडुलिपि विरासत को संरक्षित करना, डिजिटल बनाना और प्रसारित करना है। यह पांडुलिपियों में दर्ज प्राचीन ज्ञान प्रणालियों को संरक्षित करने पर केंद्रित है। यह उन्हें डिजिटल रिपॉजिटरी और संरक्षण नेटवर्क के माध्यम से अनुसंधान और सार्वजनिक जुड़ाव के लिए भी सुलभ बनाता है।

यह पहल इन दुर्लभ पांडुलिपियों की सुरक्षा के लिए आधुनिक तकनीकों को एकीकृत करती है और यह सुनिश्चित करती है कि वे विश्व स्तर पर सुलभ हों।

इसके अतिरिक्त, पांडुलिपियों का एक व्यापक राष्ट्रीय डेटाबेस पहचानने, दस्तावेजीकरण करने और बनाने के लिए मार्च 2026 में राष्ट्रीय पांडुलिपि सर्वेक्षण भी शुरू किया गया था। सर्वेक्षण के दौरान, 1.19 करोड़ से अधिक पांडुलिपियों की सूचना मिली है। देश भर में उपलब्ध डिजिटल पांडुलिपियों की कुल संख्या 8 लाख से अधिक है, इनमें से 4.40 लाख से अधिक पांडुलिपियां वर्तमान में ज्ञान भारतम पोर्टल पर सार्वजनिक पहुंच के लिए उपलब्ध हैं। ये राज्यवार सुलभ हैं।

भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार भी अभिलेख पटल के माध्यम से अभिलेखीय अभिलेखों का डिजिटलीकरण कर रहा है। फरवरी 2026 तक, पोर्टल ने 18.23 करोड़ पृष्ठों, 0.73 करोड़ संदर्भ मीडिया और 0.38 करोड़ डिजिटल रिकॉर्ड की मेजबानी की।

स्मारकों और पुरावशेषों पर राष्ट्रीय मिशन

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अंतर्गत राष्ट्रीय स्मारक एवं पुरावशेष मिशन कार्यान्वित किया जाता है। यह भारत की निर्मित विरासत और पुरावशेषों का एक विश्वसनीय राष्ट्रीय डेटाबेस बनाकर संरक्षण सहयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मिशन का उद्देश्य सीधे संरक्षण कार्य की योजना, प्राथमिकता और निगरानी की सूचना के साथ-साथ जानकारी देने के लिए देश में सभी स्मारकों और पुरावशेषों की एक सूची का दस्तावेजीकरण और निर्माण करना है।

मार्च 2026 तक, एनएमएमए ने 1.84 लाख स्मारकों का दस्तावेजीकरण किया है, इसमें निर्मित विरासत और स्थल शामिल हैं। पूरे भारत में 17.20 लाख पुरावशेषों का भी दस्तावेजीकरण किया गया है।

अतीत का संरक्षण, भविष्य को दिशा देना

भारत की सांस्कृतिक विरासत एक जीवंत विरासत है। यह पीढ़ियों तक लोगों को प्रेरित करती है, शिक्षित करती है और जोड़ती रहती है। सारनाथ का शिलालेख शिक्षा, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सतत विकास में असाधारण मूल्य के स्थानों के संरक्षण के लिए देश की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। जैसे-जैसे भारत आगे बढ़ेगा, अपनी विरासत की रक्षा करने, अपनी सभ्यतागत विरासत को संरक्षित करने और इसे दुनिया के साथ साझा करने पर केंद्रित रहेगा।

संदर्भ:

संस्कृति मंत्रालय

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2260755®=48&lang=2>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2243788®=48&lang=2>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2289399®=48&lang=1>
<https://culture.gov.in/ministry/about-us>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2293807®=48&lang=1>
<https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?NotelId=158940&ModuleId=3®=48&lang=2>
https://sansad.in/getFile/loksabhaquestions/annex/187/AU2704_e4BQSu.pdf?source=pqals

यूनेस्को

<https://www.unesco.org/en/world-heritage>
<https://whc.unesco.org/en/statesparties/in>
<https://whc.unesco.org/en/list/stat#s2>
<https://whc.unesco.org/en/list/>

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

<https://www.facebook.com/photo?fbid=1356550013329538&set=pcb.1356550116662861>
<https://www.facebook.com/photo/?fbid=1356550016662871&set=pcb.1356550116662861>
<https://www.facebook.com/photo/?fbid=1356550023329537&set=pcb.1356550116662861>

पीआईबी रिसर्च

पीके/केसी/वीके/ओपी